ख़ानदाने इज्तेहाद और अज़ादारी

सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ जायसी'
अनुवादक : काज़िम महदी नगरौरी

हज़रत आदम (अ0) ने जब से ज़मीन पर क़दम रखा तब ही से ज़मीन पर ज़िक्रे इमामे हुसैन (अ0) और उनके मसाएब पर आहो बुका का सिलसिला शुरु हो गया उसके बाद जितने भी अम्बिया–ए–किराम दुनिया में हिदायते इन्सानी के लिए आए उन्हें ज़िन्दगी के किसी न किसी मोड़ पर जिबरईल के ज़रिए हुसैन (अ0) मज़लूम की अज़ीम कुर्बानी व मुसीबत की तरफ ज़रूर ध्यान दिलाया गया और उन्होंने मुस्तक़बिल की उस बड़ी मुसीबत पर गिरिया करके बताया कि मुसीबत पर गिरिया बिदअत नहीं बल्कि मज़लूम का तज़किरा इन्क़िलाब का बाअिस और ज़ालिमों की शर्मिन्दगी और जुल्म के ख़ात्मे का सबब है शायद इसी लिए शायर कहता है :–

''नार–ए–इन्क़िलाब है मातमे रफ्तगाँ नहीं''

और अगर कभी किसी फितरत के दुश्मन ने कह भी दिया कि:–

''वह रोएं जो क़ातिल है ममाते शोहदा के
हम ज़िन्द–ए–जावेद का मातम नहीं करते''

तो फौरन ख़ानदाने इज्तेहाद का रुकने रकीन अपने आबाई फरीज़े के तहत ऐसी सोच रखने वालों को सिर्फ ख़ामोश ही नहीं करता बल्कि हमेशा के लिए दावते फिक्र भी यह कहकर दे देता है कि :–

क्या रोओगे उनको जो हलाके अबदी हैं
क्यों ज़िन्द–ए–जवेद का मातम नहीं करते''
(सैय्यदुल उलमा)

अदीबे आज़म मौलाना सैय्यद मुहम्मद बाक़िर शम्स अपनी किताब ''हिन्दुस्तान में शीअियत की तारीख़'' में लिखते हैं :–

''ताज़ियादारी का वजूद हिन्दुस्तान में बहुत पहले से था। दक्षिण में आशूरख़ाना, सिंध में इमाम बारगाह थी। उत्तरी भारत में फूंस और कपड़े के इमामबाड़े मुहर्रम में बनते थे। दस दिन के लिए पक्की इमारत की क्या ज़रूरत थी। रुलाने वाली नज़्में अकेले और चन्द आदमी मिलके राग से पढ़ते थे। मौजूदा ज़माने की सोज़ख़्वानी उसी की यादगार है, इससे सिर्फ सवाब हासिल करने के और कोई फाएदा न था। वह भी जबकि शरअी हद के अन्दर हो, जुलूस भी निकलते थे जिनमें शहनाई, रौशन चौकी, तब्ल, ताशा, झाँझ बजते और माही मरातिब (मछली और चौपायों के सर चाँदी और पीतल के बाँसों पर लगे हुए) के साथ बुर्राक़ और गुम्बद ताज़ियों की जगह होते थे, कुछ–कुछ दूर पर ठहर–ठहर के बाँक और पटे को दिखाते और या हुसैन (अ0) की आवाज़ बुलन्द करते। उन रस्मों के बजा लाने में सारे मुसलमान एक ही तरह शरीक थे।

गुफ़रानमआब (रह0) ने रौशन चौकी और शहनाई को गाने–बजाने के आले होने की वजह से हराम और तबल को जंगी बाजा होने की वजह से जाएज़ क़रार दिया, झंडियों और माही मरातिब के बदले अलम, गुम्बद की जगह ताज़िये और बाँक और पटे का फन दिखाने के बजाए सीनाज़नी और हुसैन (अ0) हुसैन (अ0) को रिवाज दिया।

हाज़री, मेहंदी और नज़र व नियाज़ ऐसी

रस्में क़ाएम कीं, मुहर्रम के दस दिन में हर दिन एक शहीद के ज़िक्र से ख़ास किया। मजलिसों में इराक़ की रौज़ा ख़्वानी के तरीक़े पर ज़ाकरी शुरु की। जिसमें अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम के फ़ज़ाएल में हदीसें भी मसाएब के साथ बयान की जाने लगीं। इस तरह मजलिस की इफादियत बढ़ गयी और उसमें तबलीग़ी पहलू पैदा हो गया। और इन रस्मों को इतना आम कर दिया कि घर–घर मजलिस और गली–गली ताज़िये उठने लगे। इस तरह उन्होंने शीओं की ताज़ियादारी को एक नयी शक्ल देकर आम मुसलमानों से अलग कर दिया। और इससे मज़हबी तबलीग़, क़ौमी तनज़ीम और शीई तमद्दुन की तश्कील की।

इस सिलसिले में एक कमी जो इराक़ व ईरान में है उन्होंने यहाँ उसको पूरा किया। इराक़ व ईरान के उलमा मजालिसें पढ़ना अपनी शान और मर्तबे के ख़िलाफ समझते हैं, इसका नतीजा यह हुआ कि ज़ाकरी जिसे वहाँ रौज़ा ख़्वानी कहते है कम पढ़े लिखे लोगों का काम रह गया। और उसमें कोई तरक़्क़ी न हो सकी। हिन्दुस्तान में मजालिसों में मरसिया पढ़ा जाता था। उनका ख़याल था कि मजलिस शाएराना कमाल दिखाने की जगह नहीं है इसमें फज़ाएल व मसाएबे अहलेबैत (अ0) बयान होना चाहियें। उन्होंने वाक़ेआते कर्बला पर मोतबर रिवायतों का एक बड़ा ज़ख़ीरा ''इसारतुल अहज़ान'' के नाम से पेश किया। और आशूर के दिन अस्र के बाद खुद मज्लिस पढ़ने की शुरुआत की, इस तरह हिन्दुस्तान के उलमा में उन्होंने यह सुन्नत क़ाएम की कि उनके बाद उनके जानशीन यह मजालिस पढ़ते रहे। आज भी यह मजलिस उसी वक़्त उनके इमामबाड़े में होती है। अब यहाँ के उलमा को जो हक़ीक़त में उन्हीं की औलाद थे, इस पर एतराज़ और इससे बचाव की क्या हिम्मत हो सकती थी। नतीजा यह हुआ कि कस्रत से उलमा मजालिसें पढ़ने लगे।''

हज़रत ग़ुफ़रानमआब ने ग़लत रसमों को मिटाकर कर अज़ाए सैय्यदुश्शोहदा (अ0) को शरई निज़ाम के साथ फरोग़ दिया। साथ ही अकसर इमामबाड़ों से पहले अपने हाथ से अज़ाख़ान–ए–हुसैनी का संगे बुनियाद रखा। और पहले पहल मजालिस की बुनियाद रखी बल्कि हज़रत सुलतानुल उलमा रिज़वानमआब को इजाज़–ए–इज्तेहाद व वसीयतनामे में अज़ादारी में मसरूफ रहने की वसीयत भी फरमायी। (तर्जुमा अरबी इबारत) ''यानी ऐ फ़र्ज़न्द! मैं तुम्हें जनाबे सैय्यदुश्शोहदा ख़ामिसे आले अबा सिब्ते रसूलुस्सक़लैन हज़रत इमाम हुसैन (अ0) की जाँसोज़ मुसीबत पर रोने, पीटने की वसीयत करता हूँ ख़ास तौर से उस ज़माने में जबकि उनके सर क़लम किये गये, उनके छोटे–छोटे बच्चे ज़िबह किये गये। उनके हरमे मोहतरम क़ैद किये गये और कूचे व बाज़ार में उनकी तौहीन की गयी।''

हज़रत ग़ुफ़रानमआब ने 1200 हिजरी से लखनऊ को मरकज़ बनाकर तमाम हिन्दुस्तान में जिस तरह शीईयत की तबलीग़ व इशाअत का काम अन्जाम दिया उसी तरह अज़ादारी को फैलाने और उसके असर और फाएदे को बढ़ाने में अपनी निगाह जमाए रखी। इसलिए आप ने एक अज़ाख़ाना अपने वतन नसीराबाद में बनवाया और फिर दूसरा अज़ाख़ाना 1227 हिजरी में लखनऊ में बनवाया जिसके साथ एक मस्जिद भी तामीर फरमायी।

शम्स लखनवी लिखते हैं कि :– ''ग़ुफ़रानमआब ने मजालिसों के मुनअक़िद करने पर ज़ोर दिया खुद भी इमामबाड़ा बनवाया और उसको सामाने आराइश से भरने के बजाए मजलिसों का एहतेमाम किया और हदीसख़्वानी पर ज़्यादा ध्यान दिया।''

हुसैनिया–ए–ग़ुफ़रानमआब की तामीर और मजलिस को तक़रीबन दो सौ साल पूरे होने को हैं। इसके पहले ज़ाकिर खुद ग़ुफ़रानमआब (रह0) हैं, दूसरे ज़ाकिर आपके बड़े बेटे हैं जो अवध में हुकूमते शरअिया की बुनियाद रखने वाले भी हैं और जिन्होंने दीनदारी और अज़ादारी को और ज़्यादा बढ़ाया। सुलतानुल उलमा नव्वरल्लाहु मरक़दहू अस्रे आशूर को मिम्बर पर नंगे सर तशरीफ ले जाकर मसाएब का तज़किरा फरमाते थे जिनके कुछ जुमले मजलिस में कोहराम मचा देते थे। सुलतानुल उलमा के बाद मलिकुल उलमा मग़फिरतमआब ने यह सुन्नत क़ाएम रखी उनके बाद मलाज़ुलउलमा मौलाना सैय्यद अबुलहसन उर्फ बच्छन साहब क़िब्ला इस अस्र की मजलिस को अपने इन्तिहाई असर वाले अन्दाज़ में पढ़ते रहे और फिर बह्रुलउलूम मौलाना सैय्यद मुहम्मद हुसैन उर्फ अल्लन साहब क़िब्ला तो एक मुजतहिदाना रंगे ज़ाकिरी के बानी हुए जिनके बाद से वह फ़र्क जो उलमा व ज़ाकेरीन के बीच था, बहुत हद तक ख़त्म हो गया। मौलाना शम्स लिखते हैं कि :– ''बह्रुलउलूम ने ज़किरी के फन में इंक़लाब पैदा किया। हदीस व तफसीर और फलसफियाना मूशिगाफियों से तक़रीर को इल्मी बनाकर मौजूदा ज़ाकरी के अन्दाज़ के ईजाद करने वाले हुए।'' बहरुलउलूम के ईजाद किए हुए ज़ाक़री के अन्दाज़ को ख़ानदाने इज्तेहाद से मुताल्लिक़ ज़ाकिर, ख़तीबे आज़म अल्लामा सैय्यद सिब्ते हसन नक़वी फातिर जाएसी ने आसमान पर पहुँचा दिया। और ख़तीबे आज़म ज़ाकरी के अहदे शबाब ही में ''ज़ाकिर शामे ग़रीबाँ'' के लक़ब से सज कर उमदतुलउलमा मौलाना सैय्यद कल्बे हुसैन नक़वी मुजतहिद ने ज़ाकरी शुरु की। और कुछ ही अरसे में आलमी शोहरत के मालिक ज़ाकिर हो गये। उमदतुलउलमा ने तक़रीबन साठ साल ज़िक्रे फ़ज़ाएल व मसाएबे अहलेबैत (अ0) बयान फरमाए और 1926 ई0 से आख़िर ज़िन्दगी तक दुनिया भर में सुनी जाने वाली मजलिसे शामे ग़रीबाँ पढ़ी। हयातुल्लाह अन्सारी का बयान है कि :– ''उन्हें अलफाज़ के पैकर सजाने के साथ उनको जज़्बात की रूह अता करने का भी सलीक़ा था।''

साहेबे मतलउल अनवार तहरीर फरमाते हैं कि ''मौलाना कल्बे हुसैन साहब को ख़ुदा ने क़ुव्वते बयान और ख़िताबत का मलका अता किया था इसलिए मिम्बर को ज़ीनत बख़्शी और दिनबदिन तरक़्क़ी करते गए। मुताला और मेहनत से अपने बुज़ुर्गों के सामने शोहरत और नामवरी के मदारिजे आलिया तै किए। हर अन्जुमन उन्हें अपना सरपरस्त जानती थी। बर्रे सग़ीर के हर गोशे तक उनकी आवाज़ पहुँचती थी। शीआ एजीटेशन में उनकी क़ैद और सुन्नी शीआ स्टेज पर उनकी तक़रीर, शीओं की लीडरी और सुन्नियों से इत्तेहाद उनकी शख़्सियत का रौशन पहलू है। इन सिफात ने उन्हें हैरतअंगेज़ महबूबियत बख़्शी थी। जनाब नज्मुल मिल्लत और नासिरुल मिल्लत के बाद मरजेईयत में उनकी ज़ात अकेली हो गयी थी। उनकी सबसे बड़ी मसरुफियत मजलिसें थीं। वह बर्रे सग़ीर के गोशे–गोशे में पहुँचे मगर जुमे के दिन आसिफ़ुद्दौला की मसजिद में नमाज़ हर हाल में अदा की। मुहर्रम में अश्र–ए–मजालिस की गिनती दुश्वार है लेकिन ग़ुफ़रानमआब के इमामबाड़े और छोटी रानी के अज़ाख़ान–ए–इक़बाल मंज़िल की मजलिसें यादगार थीं। ख़िताबत में उनका तरीक़ा बहुत दिलकश था। उनका लहजा नर्म, अन्दाज़े बयाँ सादा, ज़बान साफ और मीठी, मतलब लतीफ़ और आम फ़हेम और आलेमाना कौसर की रवानी, सलसबील का बहाव, मिम्बर

का वक़ार और आवाज़ का धीमापन, न चीख़ न पुकार, न दबी हुई सदा, हज़ारों की भीड़ मगर दूर—दूर तक आवाज़ पहुँच रही है। आवाज़ के साथ सुनने वालों का ज़हन हाज़िर, दुरूद व दाद, गिरया व फरयाद, जब चाहा रुला दिया फिर मसाएब में न बनावट न फ़ज़ाएल में शोर। यह मालूम होता था जैसे समुन्द्र की सतह पर हवा के झोंके हल्की—हल्की मौज पैदा कर रहे हैं।''

ख़तीबे आज़म के अहद में ख़ानदाने इज्तेहाद के एक और बड़े मुहक़्क़िक़ यानी हकीमुल उम्मत अल्लाम—ए—हिन्दी सैय्यद अहमद नक़वी मुजतहिद भी अपने इल्म व फन्ने ख़िताबत से ज़माने को फाएदा पहुँचा रहे थे और कुछ वक़्त के बाद तो सैय्यदुल उलमा अल्लामा सैय्यद अली नक़ी नक़वी साहेब क़िब्ला ने कमाले एहतियात व तहक़ीक़ से ज़ाकरी को मेराज ही अता कर दी।

अल्लामा सैय्यद सईद अख़्तर गोपालपुरी ''खुर्शीदे ख़ावर'' में लिखते हैं कि :— ''सैय्यदुलउलमा की ख़िताबत का एक ख़ास रंग था। जो इबारत सजाने और सस्ती नुक्ता आफरीनी के बजाए इल्म और तहक़ीक़ पर मबनी था और एक घण्टे की मजलिस में हक़ाएक़ व मआरिफ के कितने दरवाज़े खुल जाते थे। उनकी तक़रीर व तहरीरमें बहुत कम फ़र्क़ होता था। दूसरी ख़ास बात उनकी तक़रीरों में यह थी कि हर मज़हब व मिल्लत का मानने वाला उसे दिली सुकून के साथ सुन सकता था और फाएदा उठा सकता था। किसी जुमले से किसी के दिल दुखाने का ख़तरा नहीं था।''

और इसी दौरे तहक़ीक़ व तबलीग़ में ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ उमदतुल उलमा के दो बेटों यानी आक़ाए शरीअत सफवतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी इमामे जुमा लखनऊ ताबा सराह और मुफ़क्किरे इस्लाम डाक्टर सैय्यद कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला ने भी तबलीग़े दीन के साथ अज़ादारी के फैलाने के लिए ज़ाकरी का सहारा लिया और हद है कि सफवतुलउलमा ने अज़ा के ही काम में शरबते शहादत भी नोश फरमा लिया।

ख़ानदाने इज्तेहाद के तमाम लोगों के घर—घर अज़ाख़ाने हैं ही लेकिन साल भर के लिए ज़ियारतगाहे आम व ख़ास की हैसियत जिन अज़ाख़ानों को हासिल है वह हुसैनिय—ए—ग़ुफ़रान मआब के अलावा, हुसैनिय—ए—जन्नतमआब, हुसैननिया—ए—मौलाना अली नक़ी और कर्बलाए मेहदी मुनसिफुद्दौला की तामीर करायी हुई हैं। ख़ानदाने इज्तेहाद के जिन तारीख़साज़ ज़ाकिरों का पिछली सतरों में ज़िक्रेख़ैर हुआ है उनके अलावा भी हर अहद में बाकमाल ज़ाकेरीन व वाएज़ीन, मरसिया गोयान व मरसिया ख़्वानान हज़रात की एक अच्छी ख़ासी तादाद थी और ख़ुदा का शुक्र है कि आज भी हिन्द व पाक में उलमा व खुतबा—ए—ख़ानदाने इज्तेहाद ''ख़ालिक़ की तौहीद और ख़लाएक़ के इत्तेहाद'' के तहत ख़ुदा के दीन की ख़िदमत और अज़ाए सैय्यदुश्शोहदा की तबलीग़ में मसरूफ हैं और इन्शाअल्लाह क़यामत तक मसरूफ रहेंगे। आक़ाए शरीअत के बाद से तालीमाते इस्लामी के अज़ीम मरकज़ हुसैनिय—ए—हज़रत ग़ुफ़रानमआब में क़ाएदे मिल्लते जाफरिया मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी साहब (इमामे जुमा लखनऊ) अश्र—ए—मजालिस और इसी अज़ाख़ाने में ईजाद की हुई मजलिसे शामे ग़रीबाँ को ख़िताब फरमा रहे हैं और ईमान को जगाने वाले व निफाक़ को ख़त्म करने वाले बयानात से मोमिनीने केराम फाएदा उठा रहे हैं। इस साल मौसूफ ने उलमा व खुतबा से ख़्वाहिश की है कि वह अपनी तक़रीरों से इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन को ताक़त पहुँचाएं।

अज़ाए इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन ही नहीं बल्कि इत्तेहादे इन्सानी का सबसे बड़ा और फाएदेमन्द ज़रिया है।